International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 343-344

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 343-344
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-07-2020
Accepted: 17-08-2020

डॉ0 रंजना कुमारी
संस्कृत अध्यापिकाए उ0वि0 पदमा, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 रंजना कुमारी
संस्कृत अध्यापिकाए उ0वि0 पदमा, मधुबनी, बिहार, भारत

महाप्रस्थान के स्मार्त सिद्धान्त और साहित्यिक दृष्टान्त

डॉ0 रंजना कुमारी

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2020.v6.i5f.1189

प्रस्तावना

भारतीय जीवन सोलह संस्कारों में विभक्त [1] है। इन सोलह संस्कारों में अन्तिम संस्कार है–महाप्रस्थान। इहलोक से परलोक की यात्रा। इस भौतिक शरीर का परित्याग कर लोकान्तर की प्राप्ति। गीता इस आनिवार्य कार्य का उद्घोष करते कहती है–जातस्य कि ध्रुवोमृत्युः अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।''देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तर प्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति [2]। अर्थात् जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है। जिस प्रकार शरीर में स्थित आत्मा (देही) इस शरीर में कुमारत्व, यौवन आदि को प्राप्त करता है, उसी प्रकार देहान्तर की प्राप्ति भी एक शाश्वत प्रक्रिया है। अतः धीर पुरूष इस मृत्यु के क्षण में शोक नहीं प्राप्त करते हैं। अध्यात्म की दृष्टि में पुराने वस्त्र को छोड़कर नवीन वस्त्र धारण करने के समान ही यह लोकान्तर प्राप्ति है। [3]

मनुस्मुति में हड़दी–रूपी स्तम्भ वाले स्नायुरूपी रज्जुसे बँधे, रक्त और मांस के लेप से पूर्ण, त्वचा से अच्छादित, मूत्रपुरीष के दुर्गन्ध से युक्त, वृद्धत्व, उपताप और शोक से आक्रान्त, व्याधि, भूख, प्यास, ठंडा, गर्म से सतत परिपीड़ित पञ्चरचित इस अधम शरीर के त्याग पर बल दिया गया है [4]।

ज्योतिष–शास्त्र में महा–प्रस्थान हेतु उपादेय 'मृत्युयोग' का अन्वेषण किया गया है। व्याकरण मृड्ऽ प्राणत्यागे धातु से औणादिक त्युक प्रत्यय के योग से 'मृत्यु' शब्द की व्युत्पति करता मिलता है। शब्दकोष इसके पर्यायवाची शब्दों को प्रस्तुत करता है–अमरकोष में प्राणवियोग, कालधर्म, दिष्टान्त, प्रत्यय, अत्यय, अन्त, पञ्चता, नाश, मरण, निधन, दश शब्द प्रस्तुत किए गए हैं। पञ्चत्वं, मृतम्, मृतिः, परलोकगम, दीर्घानिद्रा, निमीलन, अस्त, अवसान, चिरानिद्रा, महायात्रा आदि अनेक मृत्युवाची शब्द मिलते हैं [5]। इस प्रकार शास्त्रकारों के विवेचन का एक रोचक विषय मृत्यु रहा है।

मनुस्मृति में 'नदीकूलं यथा वृक्षः वृक्षं वा शकुनिर्यथा' के द्वारा महा–प्रस्थान के दो भेद किए गए हैं [6]। प्रथम आकस्मिक मृत्यु द्वितीय स्वैच्छिक मृत्यु। नदी के तट पर स्थित वृक्ष अज्ञात, अचिंतित रूप से जल के वेग या प्रचंडवायु के कारण धराशायी होकर नदी वेग में विलीन हो जाता है। किंतु, वृक्ष पर बैठा पक्षी स्वेच्छा से वृक्ष का त्याग कर उड़ जाता है। पक्षी का उड्डयन इच्छाधीन है, स्वैच्छिक है। इसे कोई उड़ने के लिए बाध्य नहीं करता। संस्कृत साहित्य में इसी इच्छाधीन मृत्यु की, महा–प्रस्थान संज्ञा दी गयी है।

मनु कहते हैं – रोग से पराभूत होने के पूर्व ही वायु भक्षण तथा पानी मात्र ग्रहण करते हुए, राग द्वेष का सर्वथा परित्याग कर, शरीरस्थ अग्नि को प्रज्वलित कर, अकुटिल गति से ईशान कोण की ओर महा–प्रस्थान करना चाहिए। पूर्व उत्तर कोण में तब तक आगे बढ़ते रहना चाहिए जब तक शरीर संज्ञाहीन होकर गिर न जाए। भारतेन्दु इसी स्वैच्छिक महागमन की प्रशंसा करते कहते हैं – भरनो भलो विदेश को जहाँ न अपनी कोय। माटी खाय जानवरा महामच्छोव होय।

गीता में संज्ञान स्वैच्छिक मृत्यु का निर्देश मिलता है–ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन। यः प्रयातित्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।'' शरीर के सभी द्वारों को बन्दकर, मन को हृदय में निरूद्ध कर, प्राण को सुषुम्ना नाड़ी में सुप्रतिष्ठित कर ओम् रूप एकाक्षर ब्रह्म का जोर से उच्चारण करते हुए इस शरीर का त्याग करना चाहिए। इसे ही योग धारण की संज्ञा दी गयी है [9]। महाकवि कालिदास ने रघुवंशी राजाओं के वैशिष्ट्य का वर्णन करते महा–प्रस्थान की विधि का निबंधन करते उक्त गीतोक्य तथ्य को ही दुहराया है–योगेनान्ते तनुत्यजाम् अर्थात रघुवंशी राजा योग के द्वारा ही तन का त्याग करते थे।[10]

धर्मशास्त्र गोदान, वैतरणी विधि को लोक प्रसृत करता मिलता है। भारतीय समाज में गोमय लिप्त परिशुद्ध भूमि पर विविध अन्नों को स्थापित कर महाप्रस्थान कर्ता को स्नान करा, नूतन वस्त्र धारण कर

विधिवत् पूजा सम्पन्न कर वेद मन्त्र को पढ़ते गो–पुच्छ को पकड़े पर ब्रह्म में मन समाविष्ट कर परिजन से आवेष्ठित हो महा–प्रस्थान करने की लौकिक रीति दृष्टिगोचर होती है। संस्कृत वाड्ऽमय में इच्छाधीन 'मृत्यु' का पुष्कल वर्णन मिलता है। आदिकाव्य रामायण में भगवान् राम के महाप्रस्थान का वर्णन मिलता है।[11] समागत काल से वार्त्तलाप काल में दुर्वासा के आगमन की सूचना देने के कारण लक्ष्मण स्वंय मृत्यु का वरण करते मिलते हैं। भगवान् राम अपने परिजन पुरजनों के साथ वेदमन्त्रों से उद्घोषित यज्ञधूम से परिपूत महर्षि वशिष्ठ के निर्देशन में सरयू में आवश्यक अवसरोचित कृत्यों का सम्यक् सम्पादन कर महान जन सम्भर्द के समक्ष वैष्णव तेज के साथ एकाकार होते दृष्टिगोचर होते हैं।

महाभारत के भीष्म–पर्व में भीष्म अपनी मृत्यु का रहस्य पाण्डवों को स्वंय बताते हैं। अर्जुन द्वारा शरविद्ध होने पर भी शर–शय्या पर सूर्य के उत्तरायण होने तक लेटे रहते हैं। इच्छाधीन मृत्यु का आदर्श भूत उदाहरण भीष्म का महा–प्रस्थान है। [12] पाण्डवगण समागत काल को पहचान कर स्वर्गारोहण हेतु प्रस्थान करते हैं। विधिवत् अपने उत्तराधिकारी को सिंहासनारूढ़ कर राजसी परिधान का परित्याग कर, वल्कल धारण कर, यात्रा कालीन यज्ञ का विधिवत सम्पादन कर सपत्नी सहानुज विभिन्न दिशाओं में घूमते हिमालय की ओर उन्मुख होते हैं। अपने कृत्य व बुद्धि के अनुरूप पहले द्रौपदी पृथ्वी पर गिरती है। फिर अपने पाण्डित्य के अभिमान के कारण सहदेव भू लाभ करते हैं। सौन्दर्य के अभिमान के कारण नकुल प्राण त्याग करते हैं। बहुत खाने के दोष तथा अभिमान के कारण भीमसेन की मृत्यु होती है। एकमात्र धर्म की सर्वविध रक्षा तथा अनुसरण करते कुत्ता के प्रति स्नेह व अपरित्याग के कारण युधिष्ठिर देवराज इन्द्र के रथ पर सवार हो इन्द्र के साथ सदेह स्वर्ग जाते हैं। [13]

आधुनिक काल में महाकवि विद्यापति सौ वर्ष की आयु में, जीवेम शरदः शतम् को चरितार्थ करते पर हिंसा, परद्रव्य, परस्त्री से जीवन पर्यन्त परांगमुख रहते गंगा लाभ हेतु महा–प्रस्थान करते हैं। अन्तिम पड़ाव पर पहुँचकर पौराणिक श्लोक की सत्यता का परीक्षण करने के लिए कह उठते हैंः पर हिंसा पर द्रव्य परदार पराङमुख। सोऽहमभ्यागतो देवि गंगे याहि पवित्रताम्।[14] इनकी निश्छलवाणी को सुन गंगा दो कोस नयी धारा बनाकर आती है। विद्यापति महायात्रोपयोगी गोदान, वैतरणी कृत्यों का सम्पादन कर विविध दानप्रदान कर पत्नी के साथ गंगा में लीन हो जाते हैं।

इस प्रकार अनेक इच्छाधीन मृत्यु के आख्यानों, उपाख्यानों से संस्कृत वाड्ऽमय सुवासित है। ऋषियों के सूक्ष्म चिन्तन से निर्मित भारतीय संस्कृति मृत्यु को महा–प्रस्थान, महायात्रा, महागमन की संज्ञाप्रदान कर एक कारूणिक क्षण को भी मंगलमय, कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत किया है, जो विश्व के अन्य साहित्य में दुर्लभ है।

सन्दर्भ

1. मनुस्मृति–निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितं विधिः। 2/16
2. गीता–द्वितीय अध्याय 27, 18, 13
3. वही–द्वितीय अध्याय श्लोक–22
4. आस्थिरयूणं स्नायुयुतं मांसशोणित लेपनम्। चर्मावनद्धं दुर्गन्धि पूर्ण मूत्रपुरीषयेड्ऽ जरा शोक समाविष्टं रोगायतनभातुरम्। रजस्वलमानित्यं चभूतवासामिमं त्यजेत–6/76/77
5. शब्द कल्पद्रुम तृतीय भाग, पृ0–771
6. मनु–स्मृति–6/78
7. अपराजितां वास्थाय प्रजोद्देश माजिह्मः। अगनिपाताच्छरीस्ययुक्तो वार्यनिलाशनः मनुस्मृति–6/31
8. गीता–8/13
9. सर्वद्वाराणि संयम्य मनोहृदिनिरूध्य च। मुर्ध्न्याधयात्मनः प्राणमास्थिता योगकारणम् गीता सं0 6 श्लो./2
10. शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवनेविषयैषिणां वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्तेतनूत्यजाम्'' रघुवंश प्रथम सर्गश्लोक–8 पृ. 4
11. उत्तरकाण्ड–सर्ग–109, श्री रामस्य महा–प्रस्थानम् 'पृ. –1064–1065 उत्तरकाण्ड–सर्ग–110 वैष्णवतेजःप्रवेशम् पृ. 1065–1065
12. महाभारत भीष्म–पर्व–प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर
13. महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व, गीता प्रेस गोरखपुर
14. पुरूष–परीक्षा, तात्विक कथा संख्या–30 श्लोक संख्या–03